भजन

तर्ज–ओ साथी रे

ओ साथी रे पिया बिना भी क्या जीना
झूठी इस दुनिया में,फानी इस दुनिया में
सुख तो मिला है कहीं ना

1–पीठ देकर अपने धनी को,झूठी दुनिया में हम है आये
भूले है आ कर के, ठोकरें खाकर के
सुख तो मिला है कहीं ना

2–दुखी देखकर अपनी रुहों को,रह न सके मेरे प्राण प्यारे
चल के वों आए है, जाम वो पिलाए है
मिलता भी ये सुख कहीं ना

3–सुख दिखाए मूल वतन के,जान के निसबत धाम की तुमने
भूले है जान के, पूरा पहचान के
माया ने इश्क है छीना

4–वाणी जगाती है यादें दिलाती है,बैठक ना करियो बंद साथ जी
लागोगे दुख को तो दुख तुमको लागसी,
याद करो निज सुख को दुख तुमसे भागसी
सदा राज रस पीना